॥ श्रीः ॥

कररेखासंख्यावली ।

अर्थात्

सामुद्रिक "पद्य"

खेमराज श्रीकृष्णदास,

(खेतवाडी ७ वीं गल्ली खंबाटा लैन)

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बंबई.

॥ श्रीः ॥

करेखासंख्यावली ।

अर्थात्

सामुद्रिक "पद्य"

जिसको

श्रीमद्धरिगंभीरिये कविसंतसंगीतक

विष्णुदासजीने रचा ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

मार्गशीर्ष संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ ॐ सत्यगुरुप्रसादि ॥

(कररेखा संख्यावली)

सामुद्रिक ।

संत संगीतक विष्णुदास श्रीमत् गहिर गंभीरिये कृत प्रारम्भ ।

दोहा ।

सत्यनाम करतारको, नमस्कारकरबंद ॥ विष्णु-
दास विहरत सदा, आयस सूरज चंद॥ १ ॥उपादान
कारण जगत, रचना अगम अपार ॥ विष्णुदास
सबही धरयो, दुख सुख हाथ मँझार ॥२॥ जल-
शायी भगवानसों, पूछयो विधिकर वंद ॥ पार्वती
पुनि शंभुसों, प्रश्नहिं करयो अमंद ॥३॥ चौ०-सो
सेवक जो पूछयो मोहीं॥ब्योरासबही भाषोंतोहीं॥
दुख सुख हानि लाभकरमाहीं ॥ कर्मरेख जाकर

मुनि गाहीं ॥४॥ पांच वर्षसे पूरव प्यारे ॥ जिन कर हेरो जगत मँझारे ॥ षट वा सप्त लगे शिशु जबहीं ॥ नर नारी कर हेरो तबहीं ॥५॥ दोहा-दाहिनकर नरका लखो, बाँया बाम निहार ॥ विष्णु दास शंका बिना, सबही करो विचार ॥ ६ ॥ चि-कणी डूँघी चमकती, सीधी रेखा जोइ ॥ उसको नायक मानिए, धनगृह अतिही होइ ॥७॥ कमल वर्ण रेखा यदी, करे हुकूमत सोय ॥ अरुणवर्ण रेखा लखे, अतिउदार वह होय ॥८॥ होय पियाजी रंग जहँ, सो पावे विश्राम ॥ जेकरमारुथो रंगसम, सर्व रहे धन धाम ॥ ९ ॥ कृष्णवर्ण रेखा लखो, चेंटीकर धनजाय ॥ बाँयोहीं निर्धन भवे, कहूं न थिरता पाय ॥१०॥ चौ०—कछुक कृष्णता वर्ण मँझार ॥ होय दरिद्री धनदए हार ॥ पीतवर्ण पुनि श्वेत जु होय ॥ रोगी दुखिया जानो सोय ॥११॥ रेखा सर्व एकादश जान ॥ और व्यर्थ रेखा पहिचान ॥ लघु२

रेख दरिद्र जनावै ॥ जो दीरघ ऊपरसें जावै ॥१२॥
उस दीरघको खंडत मान ॥ सुख नहिं प्राप्ति होय
धनहान ॥ जो रेखा टूटीसीहोय ॥ इसीतरह विथरी
है जोय ॥ १३ ॥ इनकर विह्वल नाम बखानो ॥
बिन गुरु प्राप्ति नाहिं ये ज्ञानो ॥ विह्वलते हो सर्प
अकार ॥ पृथक् तिष्ठती हाथ मँझार ॥१४॥ रुद्रहि
रेख यथारथ जोई ॥ ताकी ओर न जावत सोई॥
उनकरभी फल शुभ नहिं भाई ॥ विष्णुदास कबि
साँच सुनाई ॥१५॥ इसप्रकार रेखा जो कहिये ॥
इसका नाम वज्रही लहिये ॥ रुद्रनसे ये अलहिदा
होय ॥ तो दुख मिले सर्व सुख जोय ॥१६॥ इस
प्रकार रेखा दृष्टावे ॥ यहभी भाग उदै दिखलावै॥
जो शिव रेख असलही कहीं ॥ तो शुभ होय शुद्ध
जो लही ॥ १७ ॥ जो तारा निसरी अरु काटी ॥
सुखद रेख उनहींने डाटी ॥ अब आयूकी रेख
बताऊं ॥ विष्णुदास सब भाषि सुनाऊं ॥ १८॥

अथ आयुरेखावर्णन ।

दोहा—अँगुरी आदि कनिष्ठिका, अन्त तर्जनी मान ॥ पै कनिष्ठिका मूलसों, दुइ यव अंतर जान ॥१९॥ जो यवरेखा मूलमें, निकसी तंत अपार॥ सोजन निशिमाहँ जनम्या, नहिं यहिमाहँ विचार॥ ॥२०॥ यवभर अंतर मूलसों, निकस परी ह्वै तंत॥ तौभी दिनको जनमहै, भाषत हैं शुभ संत॥२१॥ "जो यवसे कम निकसिआ, वाहो अधिक चिनार ॥ तौ जनमा संध्या समै, कोविद करो विचार"॥ मूल आयु इस तौरका, जो यव होवै भान॥ सो जन्मा संध्या समै, विष्णुदास सचमान॥२२॥ आयु रेखके मूलमें, तंता निकसी आहि ॥ यवरेखा भी मूलमें, प्रात जन्म लखताहि ॥ जो यवभरसे निकटही, तंता निकसी भूर ॥ रात्री आइ छिपनपै, निकसा नाहिं न सूर ॥ २३ ॥ चौपाई—अग्नि

वारभय रेखा जोई ॥ निकट आयुरेखाके सोई ॥ अर्ध आँगुरिन उनोर पछानो ॥ ऊर्ध्व सु पहुँचेकी दिशमानो ॥२४॥दोहा–अँगुरी चार निहारिये, इक इक वर्ष पचीस ॥ जेहि तिष्ठे तेहि मृत्यु है, जानो बिस्वेवीस ॥२५॥जो रेखा काटी नहीं, और मिली इक साथ ॥ तौभी मृत्यू मानिये, जननी फोरो माथ ॥२६॥जो रेखा काटी अहै, पुनिउपजी बलपाय ॥ तौऊ सजा पहिचानिए, रोग होय हट जाय॥२७॥आय रेखको हेरिये, जेहि अनामिका होय ॥ यवभर इक रेखा गई, तीस वर्षकी जोय॥ ॥२८॥ यदि दुइ यवभर आयुसों, गै अनामिका ओर ॥ साठि वर्षकी आयु लख, विष्णुदास इस ठौर ॥ २९ ॥ आयुरेख यदि मनुजकी, अतिही लघु दृष्टाय ॥ जीवन अल्पनिहारिये, मृत्यु होय सहिसाय ॥३०॥ चौपाई–तीन रेख मस्तक महँ होंय॥नर सौ वर्ष जियेगा सोय॥ चार रेख मस्तकपर सोहैं ॥ राजा होय नारि नर मोहैं ॥३१॥

पांचरेख मस्तकमेंजोई ॥ नब्बे वर्ष जियेगा सोई॥
रेख न हो ललाटपर कोई॥नब्बेही जीवेगा सोई॥
॥३२॥ रेख रोमके जड यदि होय ॥ अस्सी वर्ष
जीवेगा सोय ॥ पुनि कनिष्ठिका ओर निहारो ॥
आयूरेख चली उर धारो ॥ पूरब भाग कनिष्ठिक
केरा॥आयू टूट तहां मुख हेरा ॥३३॥ तौ दश वर्ष
जिवेगा प्रानी ॥ विष्णुदास निश्चय उर जानी ॥
आयुरेखसे रेखा कोई॥नीचे झुकी होय शिषजोई॥
॥३४॥ जलमें डूबन तहां निहारो ॥रेखहेरकर तुर्त
उचारो॥ सब ज्योतिषकी ज्योतिष जानों॥विष्णु
दासपर अति रुचि ठानो॥३५॥चमररेख जाकेकर
होय॥भूपति भूरपछानोसोय ॥ झूलतपौरकरीमद
माते॥अतिगंधर्व मधुरस्वर गाते॥३६॥बीचहथेली
तिल जो होई॥राजभाग युत जानो सोई॥समझ-
लेहु उरमाहीं ज्ञानी ॥ जसफल हो तस करों बखा
नी ॥ ३७ ॥ वृश्चिक रेखा करमहँ हेरो ॥ जहाँ

जाय अति आदर टेरो ॥ महादेव गिरिजाप्रति
गावैं॥ विष्णु विरंची प्रति समझावैं ॥ ३८ ॥दोहा-
जाके कर भीतर ध्वजा, ज्ञानी पढे वेदांत ॥ जीव
ईशकी एकता,लखे पांच तज भ्रांत ॥ ३९ ॥ रथ-
कर चक्रहु जासुकर, सो राजा पहिचान ॥ विष्णु
दास जाको सुयश, अवनीमाहँ महान ॥ ४० ॥
जाकेकरमहँ योनिका,होवो चिह्न चिनार॥सो नर
होवे मंत्री, विष्णुदास सुखकार ॥ ४१ ॥ जाके
करमें कलशहो, ताको जान दिवान ॥ विष्णुदास
इस तौर फल, श्रीपति करत बखान ॥ ४२ ॥
चौपाई—आयुरेखके ऊपर चढ़के॥ नीचे गई होय-
पुनि ढलके ॥ गिरा वृक्ष कोष्टसे कहिये ॥ कोविद
जन अपने उर लहिये ॥ ४३ ॥ दोहा —आयू
रेखासों मिली, यदि कंचीसम धाय ॥ अग्नीभय
तिस थल विषे, कहिं शिवजी सत भाय ॥४४॥

इति श्रीकरसंख्यावली, प्रथम भयो अध्याय ॥
मानव आयू रेखकाहि, विष्णुदास सहि साय ॥१॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

॥ शिष्योवाच ॥ ॥ प्रभू मातुकी रेख दीजेबताई ॥ गहेपादतोरेदएऔविहाई ॥ महाराज मैं रावरीसाम आया ॥ विष्णुदासका संश चाहो मिटाया ॥१॥ श्रीगुरुरुवाच ॥दोहा अंगुष्ठतर्जनी-मध्यसों, चलत रेख शिशु दोय ॥ जाय जो तरफ कनिष्ठिका, कही पिताकी सोय ॥२॥ दूसर पहुँ-चेतरफ होय, मूल अंगुष्ठ मँझार ॥ सो जननीकी जानिये, विष्णुदास निरधार ॥ ३ ॥ मात पिता रेखाके माहीं ॥ लघु लघु रेखा पेखिय काँहीं ॥ छिन्न भिन्न टूटीहों भारी॥सो नर भोगे नित बीमा-री ॥ निर्धन रहै नहीं सुख होवे ॥ विष्णुदास निशि वासर रोवे ॥ ४ ॥ जो त्रिकोण रेखाहो प्यारे ॥ किंवा अष्टकोण निरधारे ॥ मोटी २ रेखा होय॥ भोगी सुखिया धन युत सोय ॥ ५ ॥ चक्ररु पुनि त्रिशूल जो होई ॥ माननीय बुधिवंता सोई ॥ पितु

रेखा जु संपूरण होय ॥ पितावीर्यसे जनम्यो सोय ॥ ॥६॥ जे कर अर्धरेख पितकेरी ॥ अवर किसीका सुतलेइ हेरी ॥ मध्य अंगुष्ठ तर्जनीजोई ॥ मिलकर रेख रहे यदि दोई ॥ मातु पिताका प्रेम निहारो ॥ अन्तर होय तो कलह विचारो ॥ ७ ॥ पितारेख यदि जो लघु होवे ॥ आयू लघु तब पितुकी जोवे॥ अरुण वर्ण दीरघ है जबहीं ॥ पितुकी आयु दीर्घ लख तबहीं ॥ ८ ॥ मातु पिता युग मिलकर जौन ॥ अन्त त्रिशूल चिह्न लख तौन ॥ मातु पिता जानो स्वर्गवासी ॥ विष्णुदास कहि हरि अविनासी ॥ ९ ॥ शिष्योवाच ॥ दोहा—ऊर्ध्व रेख जिसको कहत, श्रीगुरु दीनदयाल ॥ करुणा कर वर्णन करो, शिषको करो निहाल ॥ १० ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा—पहुँचेसे रेखा उठे, अँगुरि-नकी दिशिजाय ॥ ऊर्ध्वरेख तिसको कहत, पंडित जन सतभाय ॥ ११ ॥ सवैया—ऊरधरेख चली

बलसों पुनि जाय थिरीसो अंगुष्ठ मँझारा ॥ जीवहिं साठवरे वह मानव नौबत बाजत पौर अगारा ॥ झूलतहैं दरमाहिंनिशान सुफीलकि कानभी आहि अपारा ॥ श्रीपतिदास लखो नर ईश्वर ईश्वरको सुमिरो हितधारा ॥१२॥ दोहा—ऊर्ध्वरेख यदि तर्जनी, की जड भीतर जाय ॥ हाथेमाहीं खड्ग है, करें युद्ध अधिकाय ॥ १३ ॥ करे सिपाहीकारको, वर्णाश्रम धर्मत्याग ॥ विष्णुदास हर भजन बिन, धिक धिक जन्म अभाग ॥१४ ॥ दोहा—ऊर्ध्व रेख शिष्य जायजे, मूल मध्यमा केर ॥ भाग्यवान है वंशमें, धनी सपुत्री टेर ॥१५॥ जबलग जीवे जगत मो, भोगै अती अनंद ॥ विष्णुदास तिस मनुजको, नेक न व्यापे द्वंद ॥१६॥ ऊर्ध्वरेख यदि शुभ्र हो, जाय अनमिका तीर ॥ धनी अधन ना अधिक लख, हो समान धर धीर ॥१७॥ नाहिन धनगृहमेंजमा, कर्ज न देना काहि ॥ करे समान

सो जीविका, विष्णुदास लख ताहि ॥१८॥ ऊर्ध्व-
जरेख कनिष्ठिका, अँगुरीके ढिग जाय ॥ सो नर
रहे विदेशमें, जो इखटे सो खाय ॥१९॥ अपनोही
निर्वाह कर, और सके नहिं पोष ॥ विष्णुदास
तिस पुरुषसे, घरके करो सँतोष ॥ २० ॥ व्योम
शशी रहि जगतमें, त्यागे तनु परदेश ॥ कुछ सुख
प्राप्ति न ताहिको, विष्णुदास दुख शेश ॥ २१ ॥
ऊर्ध्व रेखकी तरफ तुम, बुधजन हेरो मीत ॥ ठहिरी
किस स्थानपै, यह धारो निज चीत ॥ २२ ॥
चौपाई–पहुँचेसे जो ऊठीसी होई ॥ पितुके पास
गई नहिं सोई ॥ बालापनमें तो सुख पावै ॥ युवा
बुधापन धक्के खावै ॥ २३ ॥ पितुको छोर आयुतक
गई ॥ युवामाहिं जानो सुखमई ॥ तात आयु यदि
लीन दबाई ॥ तौ वृद्धापन सुख अधिकाई ॥ २४ ॥
तीन कालका भेव बतावत ॥ ऊर्ध्वरेख चतुरानन
गावत ॥ लखो तर्जनी केर मँझार ॥होय मूलमछरी

आकार॥२५॥ऊर्ध्वरेख तेहि निकट न गई॥वा म-
छलीमध्यमा जड़भई ॥ तिसका माल मरे पश्चात॥
भोगे अवर लखे अवदात ॥ २६ ॥ ऊर्ध्वरेख धन
संग मिलावै ॥ तेहि धन पूत संबंधी खावै ॥ मछरी
थल त्रिकोण यदि होय ॥ मिले मध्य धन रेखा
जोय ॥२७॥ तौ वह बाग तड़ाग लगावै ॥ जल-
शायी विधि प्रति समझावै ॥ धनरेखा आयु संगम
पावै॥ जीतेजी धन तोर न आवै ॥ २८ ॥ आयुरेख
सँग मेलनकरे ॥ जीतेजी तिसका सँगहरे ॥मध्यमँ-
ते रेखा इक आई ॥ सो दारिद्र केर आलाई॥२९॥
धन दरिद्र दोनों मिल गैया ॥ रोवे औरत पीटे
मैया ॥ पहुँचे माहिं मीन यदि होय ॥ वंशमाहिं
राजा लखसोय॥३०॥सन्ततवान निरंतर जानो॥
गुणी धनी अपने उर मानो ॥ मीन रेखका फल
अधिकाई ॥ विष्णुदास समझो सहिसाई॥३१॥
दोहा–कररेखा संख्यावली, इति दूसर अध्याय ॥
धनरेखा वर्णन करी, विष्णुदास सतभाय ॥ ३२ ॥

शिष्योवाच ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ गुरो भ्रातरेखा किसीभाँत जाने ॥ कहो धार दाया तबी दासमाने। लखे भृत्य आपं न रँचं दुरावो ॥ जिमे शंभु भाषा तिमे मो बतावो ॥ १ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा-जोजड़ होय कनिष्ठिका,पासातली निहार॥भ्रात-रेख तिसथल थिरत, बुधजन करो विचार ॥२॥ रेख दीरघ भ्रात थल, वड्ड भ्राता पहिचान ॥ लघु रेखा भगिनीकही,विष्णुदास मनमान॥३॥चौ०-सूधी ढूंघी रेख जु लहिये॥ जीवत भ्रात भगनिया कहिये ॥ जो रेखा काटी होय भाई ॥ मृत्युरूप कहो तहिं भाई ॥ ४ ॥ मातुरेख सँग इह मिल जावै॥भ्रातरु भगिनी रुजी बतावै ॥ जो यह रेखा साथ निहारो ॥ अंग ऊर्ध्वको रुजी निहारो॥५॥ भ्रातरेख यदि ॐ इसयुत देखो ॥ निचलेअंग रोग तब पेखो ॥ ऐसे अवर अशुभ जु निहारो ॥ रोगी

भगिनी भ्रात उचारो ॥ ६ ॥ दोहा—भ्रातन ढिग सो उपज कर, मिले मातुसों जाय ॥ तौ मातासों सुख घना, नातर दुख अधिकाय ॥७॥ भ्रातनसों रेखा उठे, जाय मिले पितुमाहिं ॥ विष्णुदास कवि जानिये, पितुसों सुख शिशुताहिं ॥८॥ चौपाई—अब संततकी रेख बताऊं ॥ भिन्न भिन्न कर सब समझाऊं ॥ इतनेनंदन होवहिं प्यारे ॥ इतने मर परलोक पधारे ॥ ९ ॥ दोहा—मातरेख पहुँचे जडों, मूल अंगुष्ट प्रयंत ॥ मध्य ताहि सुत सुता लख, विष्णुदास वर्णंत ॥१०॥ संततरेखा शुद्धहै, सूधी डुँघी आह ॥ तो सुत जीवतही रहे, पिता अती सुख पाह ॥ ११ ॥ सूक्ष्मरेखा सुता लख, काटी मृतक समान ॥ शृंग होय रेखा सिरे, तौभी संतति हान ॥ १२ ॥ तनुजरेख मध्यानते, काटी काहू आय ॥ कुछ दिन रहि नंदन मरें, विष्णुदास सतभाय ॥ १३ ॥ सुतरेखा मिल परस्पर, आदि

अंत तक होय ॥ रेखा संतत बंध यहि, नंदन जिये न कोय ॥ १४॥ बँधी रेख इक तरफसे, जो नहिं भली निहार ॥ विष्णुदास संतत कहा, होवे तासु अगार ॥ १५ ॥ माता रेखा निकट यदि, सुतरेखा दृष्टांत ॥ अति अंगुष्ठ ढिग हेरिये, आद उमर होइ तात ॥ १६ ॥ आप मरे वय अलपमें, कहते हैं त्रिपुरारि ॥ विष्णुदास कबसों कहा, नेक न कूर उचार ॥ १७ ॥ संतत रेखा झीन होय, दृष्टी आवै नाहिं ॥ तो अंगुष्ठ जड़ हेरिये, विष्णुदास कविताहिं ॥ १८ ॥ चौपाई—शिष अंगुष्ठ जड़-माहिं निहारो ॥ यव मालाका भेव विचारो ॥ है यव एक एक सुत मानो ॥ दुइसे दुइ सुत उपजै जानो ॥१९॥ तीननसे सुत भूरि भनीजे॥ सर्व यवनको शिष गिन लीजे ॥ जिते यवनको तहाँ निहरिये ॥ चिरजीवी सुत तहां उचरिये ॥ ॥ २० ॥ जो यव एक नजर नहिं आवै ॥ तौ संतति-

बिन नर पछतावै ॥ जे तुष होय तो सुख न निहारे ॥ विष्णुदास गण गणक पुकारे ॥ २१ ॥ दोहा—ज्ञानह रेख अनामिका, मध्य सो उपजी मीत ॥ हो जहँ अंत अनामिका, सेविज्ञान धर चीत ॥ २२ ॥ जो कनिष्ठिका ओर है, बहु व्यवहारी जान ॥ जो सूधी डूँघी सुभग, सो शुभ लक्षण मान ॥ २३ ॥ उमर रेख सँग यदि मिले, विद्यारेखा आय ॥ तेहि फल पहिली उमरमें, विथरे जग अधिकाय ॥ २४ ॥ आयुरेख ढिग नहिं गई, मध्यहि ठहरी यार ॥ तेहि विपाक अध उमरमें, सुखसे करो उचार ॥ ॥ २५ ॥ जो जड़ही में उपजके, उसही जो ठहि- रात ॥ आनँद हो पाछिल उमर, विष्णुदास विख्यात ॥ २६ ॥ विद्या रेख कुबज होइ, मिलेउ आयुके साथ ॥ मंत्र यंत्र सो जन पढे, तिससे हो धन हाथ ॥ ॥ २७ ॥ सुन शिष मूल अनामिका, रेखा लख विश्राम ॥ होइ जु तरफ कनिष्ठिका, विद्या लख

सुख धाम ॥ २८ ॥ चौपाई–कनिष्ठ मूलमें रेखा जौन ॥ ब्रह्मविद्याकी समझो तौन ॥ औरतकी रेखा सुनलीजे ॥ विष्णुदास तब चित्त पतीजे ॥ ॥ २९ ॥ दोहा–अँगुरी मूल कनिष्ठिका, आयु मूल परमान ॥ हाथ वक्षस्थलमें थिरत, युवती जो हितु प्रान ॥ ३० ॥ जितनी रेखा होत तेहि, तितने होत विवाह ॥ अबला गृहमें आथिरे, अन्न कहींसे आह ॥ ३१ ॥ भामिन रेखासे निरख, जाय तर्जनी ओर। होय न प्रापति योषिता, करे जुयत्न करोर॥३२॥मूल तर्जनीसे निकस, जाय योषिता ओर ॥ औरतकी साखी कही, जीवे नार बहोर ॥ ३३ ॥ इक वामे इक दाहिने, होय पुरुष कर माहिं ॥ तिसको शुभ नारी मिले,दुती विवाहे नाहिं ॥३४॥ जो इकरेखा दाहिने, वामे लघु गुरु दोइ॥ टेढ़ी ऊँधी रेख है, नारी मिले न कोइ॥३५॥ युगम रेख कर दाहिने, बाल व्यवस्था माहिं॥मिले

नारि मनभावती, ब्याहत मांपित ताहि ॥ ३६ ॥
युगल युगल युगलन विषे, भोगे भामिन वेद ॥ जो
युग रेखन अंतरा, यव सम होय नृवेद ॥ ३७ ॥
औरत रेखाके शिखर, तलीओर तिरशूल ॥ तौ
तिसके गृह कामिनी, अति कमनीया मूल ॥ ३८ ॥
औरत रेखा पृष्ठ दिशि, होवे यदि तिरशूल ॥ ताघर
नंदन होत नहिं, ज्यों अगनी ढिग तूल ॥ ३९ ॥ जो
नारीरेखा तिसे, दीनी आन विदार ॥ तौ तिसकी
नारी लखो, अति अवगुण बदकार ॥ ४० ॥ कुब्ज
रेख यदि योषिता, दुराचार लखनार । विष्णु-
दास शंकरवचन, कोविद करो विचार ॥ ४१ ॥
दोहा—कररेखा संख्यावली, इति तृतीय अध्याय ॥
विद्या भ्रात सुतन तिय, श्रीपति दियो बताय ॥ ३ ॥
शिष्योवाच ॥ निशानी छन्द—श्रीगुरु किस-
विधि जानिए, तन माहिं बिमारी ॥ करुणाकर
वर्णन करो, जावो मैं बलिहारी ॥ रेखा रुज पहिचान

मोहिं, अब देहुबताई ॥ विष्णुदासके उर अभिषे, कांक्षा अधिकाई ॥ १ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा— अंगुष्ठ अंगुलीसे यदी, मातृ रेखकी ओर ॥ इक यव अंतर हेरिये, रोग विष्णु तेहि ठौर ॥२॥ चौ० जो तिरशूल उदर बीमारी ॥ इस मानिन्द कही बलकारी ॥ विषम रोग भी बहुरि पछानो ॥ विष्णु-दास दुभता सम हानो ॥ ३ ॥ मत्स्याकार वहाँ जो लहिये ॥ शिश्नस्थान रोग कछु कहिये ॥ पुष्प कलीवत देखन करो ॥ नेत्ररोग शिष तहँ उच्चरो ॥ ॥ ४ ॥ जो यवका अकार तहँ होवे ॥ रोगभगंदर तुर्त बगोवे ॥ इस प्रकारका हो संयोग ॥ मूलद्वारं उपज्या रोग ॥ ५ ॥ अर्द्ध शशी सम होय प्रकार ॥ कुष्ठ रोग जानो विसिआर ॥ इस विधि मृग्गी रोग जनावे ॥ इह उतसाही रुज उपजावे ॥ ॥६॥ जो सूरजसम हो आकार ॥ तौ अरोगवपु ताहि निहार ॥ विष्णुदास पहिचानहिं करो ॥ तौ

पीछे फल निज मुख ररो ॥ ७ ॥ सवैया छन्द– यदि यवरूप अंगुष्ठ उदरमें नीतिवान ज्ञानी गुणखान ॥ अति आनन्द सों रहे मानवी भोजन अचे सनिग्ध महान ॥ मरण प्रयंत रहे सुख माहीं यामहिं संशय करो न कोय ॥ विष्णुदास निज नैन निहारा तब तुमरे प्रति भाषा सोय ॥ ॥ ८ ॥ पास अंगुष्ठ अंगु सत तर्जनी, तास मूल यव यदि द्रष्टाय ॥ भोगी सुखी भवे भव माहीं, सुन्दर कामिन कण्ठ लगाय॥करे अनंद जगतके माहीं विद्यावान जान मम मीत॥ विष्णुदास सद आनंद माहीं रहे लोकमहँ अति निर्भीत ॥ ९ ॥ दोहा–देखो यह फल मध्यमा, कर होय सुतवंत ॥ करे अमीरी जगतमें, विष्णुदास वरणंत ॥ १० ॥ प्रथम अंगुरी तर्जनी, बहुरि मध्यमा मान ॥ पुनि अनामिका जानिये, फिर कनिष्ठिका जान॥११॥ त्रय त्रय अंगुरिन भाग हैं, बुधजन लेहु विचार ॥

विष्णुदास शत्रू तहाँ, दुख सुख और निहार॥१२॥
चौपाई–तर्जनी आदिभाग है जोई ॥ तामहँ शत्रू रेख बगोई॥ दूसर माहिं कष्ट पहिचानो॥ विष्णु-दास शंका सब हानो ॥ १३ ॥ पहिला भाग मध्यमा केरा॥ सोभी कष्ट गातको हेरा॥दूजे भाग अरी पहिचानो ॥ विष्णुदास हमरा वच मानो॥
॥ १४ ॥ दोहा–पूरब भाग अनामिका, तिस जा पुण्य निहार॥ कहे दूसरे खण्डमें, दासी दास विचार॥१५॥ पहिला भाग कनिष्ठिका, शत्रू तिस स्थान॥ तिरिया शत्रू मानिये, विष्णुदास मनमान ॥१६॥दूसरखण्डबखानिये,दुखजो होत असार॥ दीर्घ होय गंभीर जस, तस फल करो उचार॥१७॥
सवैया छन्द–जो पूछे मम मृत्यु कौन विधि यह संशय मम देहु मिटाय॥ आयू रेखटास सिर नाहीं तौ सुखेन नर मृतको पाय॥ जो इह भाँति साख होय निकसी तौ तजि है तनु कुछ दुख पाय॥जो

शंका कुछ रही रिदंतर तौ करको लिख देउँ बताय ॥ १८ ॥ और तर्जनी से इक आवहि आयुरेख शिर लेत दबाय ॥ जंजू सम जे घूम जाय यदि तो शस्त्रहिसे मारचो जाय ॥ जौन अशुभ आधी यव माला होवै यदी किसी कर माहिं ॥ तौ रणभूमि खड्ग कर गहिकर मारे मटे हटै सो नाहिं ॥ १९ ॥ यव अकार उस थलमें होवे तौ इस भाँति विपाक बताय॥ किसी कुकर्मी बीचसो मानव निश्चयकरके माराजाय॥ २० ॥ आयुरेखसे तंतु निकसकर तरफ हथेलीकी यदि जाय ॥ तौ चिन्ताकर हो दुख प्राप्ति वातनु रोग होय सतभाय ॥ जो अंगुरिनकी तरफ तंतु होय अग्निकेर भय देव बताय ॥ २१ ॥

दोहा–यदि करके लंबान भा, लघे जनेऊ सान ॥
उमर रेखको दाबले, सो नर गिरया मान ॥२२॥
मोढे रेखा एक होय, चौडत्तण परकार ॥ मृत्यु
बिमारी उदरसे, विष्णुदास दुखकार ॥ २३ ॥

चौपाई—अब प्रतापकी रेख बतावत ॥ आयु रेखके नीचे आवत॥अनाम मध्यमाकी दिशि जावै॥ जो सुख रेखा संगम पावै ॥ २४ ॥ तौ सुखमिले अती अधिकाई ॥ जो सुख रेखा काट गँवाई॥तौ सदही दुख भोगो भाई ॥ जस रेखा शिर मीन अकार ॥ विष्णुदास सो लख सरदार ॥ २५ ॥ दोहा--चक्र त्रिशूलरु वज्जरं, दुर्ग चक्रव्युह मान ॥ हय गय झूलें पौरपै, महाराज पहिचान ॥२६॥ ग्राम तराजू वज्र कर, जे कर होवैं मीत ॥ विष्णुदास सो नर करे, वाणिजमें अति प्रीत ॥२७॥ कमल असीकी रेख होय, अष्टकोण वा होय ॥ नर नारी होय विष्णु कवि, सुखिया कहिये सोय ॥२८॥ अंकुश कुंडल जासुके, होवें हाथ मँझार ॥ विष्णुदास सोभी भनो, बहुगाँवन सरदार ॥२९॥ कवित्त—आँगुरी कनिष्ठिकाके मूलमें निहार रेख जेती संख्या होय गनि फलको सुआनिए ॥ एकसों उदार उपकार

उरमाहिं नीत यज्ञका करैया सुखदैया उर ठानिए॥ दोय रेख होंय तो ज्ञानवान पूजनीय धर्म शील-वान है विदित जग जानिए॥तीन सों ऐश्वर्य युत महिमा महान मान विष्णुदास राज्यभाग संयुत पछानिए ॥३०॥ चारते निहार विद्यावान बुधि-युत ज्ञानी पंडित अनंत गुण संयुत अलाइए॥ पां-चसों अधिकफल मघवा समानजान चौधरीरुया-माधीश भाषिके सुनाइए ॥ रेखहोय छठ तौ कछुक फल नीकजान सप्तरेखसेभी सुख एकसे बताइए॥ पावेअपमान जगमाहिं सोअनेकथान श्रीपतिदास श्रीपति ये सुनाइए ॥३१॥ दोहा—जाके कर गिरि चिह्न हो, वानर मुण्ड अकार ॥ सो नृपकर मंत्री बने, विष्णुदास निरधार ॥ ३२ ॥ सूर शशीको चिह्न है, अष्टकोण त्रयकोण ॥ मन्दर गज हय होय जो, तौ जानो सुख भौन ॥३३॥ सुनशिष्य मूल कनिष्ठिका, होय जे रेखा तीन ॥ धर्म अर्थ

अरु काम यह, बसें हाथ परवीन ॥ ३४ ॥ एक रेख होय जासुके, सो नर धनी निहार ॥ चार होंय यदि मूलमें, भोगे नारि अपार ॥ ३५ ॥ पांच रेख सो जानिये, ज्ञानी गुणी मुनीश ॥ भन है सर्व महातमा, विष्णुदास जगदीश ॥ ३६ ॥

दोहा–कररेखा संख्यावली, इति चतुर्थ अध्याय ॥
मृत्यु रेखकरशुभाशुभ, श्रीपतिदासअलाय॥४॥

शिष्योवाच ॥ दोहा–शंख चक्र पुनि सीपिका, वर्णन करो कृपालु ॥ अरु जो करमहँ होतहै, सतगुरु दीनदयालु ॥ १ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा–पांचाँगुलके तीसरे, सुनु शिष खंड मँझार ॥ तहां निहारो दृष्टिदे, जो तुम कीन विचार॥२॥ कवित्त–जाके एक चक्र सो बाचाल जान सेषसान यदि दोय होंय तो गुणज्ञ बहु जानिए ॥ तीन होंय ताहि के वणिज्यते अपार धन चारहों चिनारसो दरिद्री

बखानिए ॥ पांचसे सुभग सर्वांग हो विलासयुत छठसे निपुण कामकेलिमें पछानिए ॥ सात सोजु विष्णुदास सुख सीम जान लेहु आठसे सरुज बात वेदमें प्रमानिए ॥ ३॥ परहा छंद—होय चक्र यदि नाथ तो राजा जानिये ॥ दशसों संत महंत सो उरमहँ ठानिये ॥ ऐसेही अब शंख सुनो मन लायके ॥ देह विष्णुकवि पृथक्पृथक् समझायके ॥ ॥ ४ ॥ एक शंख युत मानव सुखी बखानिये ॥ दोयसो अति दारिद्र गुणीजन मानिये ॥ तीन होय यदि मूर्ख निर्गुणी कहत हैं ॥ चार होंय गुणवान नारि नर लहत हैं ॥५॥ पांच शंखसों निर्धनपावै शोकको ॥ छठसे नायक होय आपने ओकको॥ सप्त शंखसे दश प्रयंत पहिचानले ॥ चले निसान बजाय भूप मन मानले ॥६॥ शीपवर्णन सवैया-एकहि शीप लखो गुणसागर होय जो दोय कवीश्वर मानो ॥ तीनसों होय धनाढ्य अती

यदि चार जु शीप जगमाहिं महानो ॥ चारसे आगे दशतकहों तब ऋद्धि रु सिद्धपती अनुमानो ॥ श्रीपति दास न कूर कही यह श्रीपति आपन आनन भानो ॥ ७ ॥ दोहा—पहुँचे रेखा एक यदि, राज भाग युतमान ॥ युग्महोय वक्ता अती, ज्ञानी गुणी बखान ॥ ८ ॥ तीनरेख पहुँचे लखो, सदा सुखी लख लेह ॥ चार रेख द्रष्टावही, सद दुख पावै देह॥ ॥ ९ ॥ सर्व सिमिट रेखा जिसे,आवहिं मुष्टि मँझार॥ विष्णुदास नरपति लखो,पूर्त रहै भंडार ॥ ॥ १० ॥ अथ तिलवर्णनम् ॥ चौपाई—पग एडी तल तिल द्रष्टावे ॥ माँगत फिरे न उदर अघावे ॥ एडी पासे तिल जु निहारो ॥ अति धनाढच सो नर निरधारो ॥ ११ ॥ निकट तर्जनी तिल यदि होय ॥ वाणिज करे विदित जग सोय ॥ वर्ष पचासका आयु जब जावे ॥ तब व्यापारसे अति सुख पावे ॥ १२ ॥ जो अंगुष्ठके ढिग तिल ल-

हिये ॥ आतम दरसी ताकर कहिये ॥ वामे कर जाके तिलहोई॥दुखकी खान पछानो सोई॥१३॥ दोहा—कर अंगुष्ठके निकट तिल, आतम दरशी नीत ॥ ईश जीवको एक लख, गुरुसों करता प्रीत ॥१४॥ तिल जाके है भालमें, भागवंत है सोय ॥ होय लिंग तिल जासुके,वल्लभ लहि सम कोय ॥ ॥१५॥जाकेतिल करमुष्टिमें,परे यदीशिष्यआय॥ भोगी अतियश जगतमें, विष्णुदास अधिकाय॥ ॥१६॥ परे जो तिल नर चिबुकमहँ, करे नपुंसक रीति ॥ चुम्बन करे अनेक जन, भने वेदपर तीति ॥१७॥ ऐसेही शिष्य जानले, तिल निज निज स्थान ॥ अब कर अँगुरी पाँच जो, दाहन-की गण प्रान ॥१८॥ चौपाई—इक अँगुरीमें त्रैत्रै रेख ॥ कहीं एकही युगमहँ देख॥ सभ इकठोकर फलकहि दीजे ॥ विष्णुदास सोई सुनलीजे ॥१९॥ द्वादश रेख होइ कर जाहू ॥ धनी सुखी लायक

लखताहू ॥ त्रयोदश रेख होंय यदि भाई ॥ अति दुखभाजन देहु बताई॥२०॥चौदह पंद्रह रेख जुगनिए ॥ चोर चुगुल तिस जनको भनिए॥ षोड़श होंय जु गणन मँझारी॥ वंचक निपुण द्यूतजुवारी॥ ॥ २१ ॥ सत्रह होंय जान बड़पापी ॥ खावे पल दश नीत सुरापी ॥ होयँ अठारहि रेख जु प्यारे॥ धर्म शील गुणवान निहारे ॥२२॥ यदि उनविंश पूज्य जग केरा ॥ वीसरेख तपसी बड़हेरा ॥ यदि इकवीस होंय ब्रह्मज्ञानी ॥ विष्णुदास इमि लेहु पछानी॥ २३॥ दोहा—अंगुष्ठ पिष्टके बीच यदि, होवै यव आकार॥ एकरेख यव अंतरे, जन्मा शुक्क मँझार ॥२४॥ जो नहिं होवै यव वहां,कृष्णपक्ष महँमान ॥ विष्णुदास इह जनमकर, कीजे पक्ष बखान ॥२५॥ दोहा—अब शिष चरण निहारिये, शुभ अरु अशुभ बखान॥ विष्णुदास श्रवणनकरो, भो सेवक कर कान ॥२६॥ नहीं दीर्घ नहिं लघु

भने, कूर्म पृष्ठ मानिंद ॥ नारी नजर न आवही, तौ तुम मान नरिंद ॥२७॥ पग चीकन गजपर चढ़े सुंदरकमलसमान ॥ दिशिकनिष्ठिका गर्त नहिं, तौ सुखपाय महान ॥२८॥ जो नीचाथल हेरिये, शुभलक्षणकी हान॥ मिली आँगुरी परस्पर, तौफल पाय महान॥२९॥ अँगुरिन नीचे गर्त नहिं, सीधे शिरे लखाय ॥ सीधामधरांगुष्ट होय, तोभी अति सुखदाय ॥३०॥ चौपाई—पग तर्जनी कुबज यदि होइ ॥ बीच अंगुष्ठ अंतरे जोइ ॥ देखे दारिद्री तासुकर भाग ॥ किसमत साथ करो अनुराग ॥ ३१ ॥ दोहा—पगतर्जनी अंगुष्ठसे, दीर्घ कछू द्रष्टाय ॥ विष्णुदास परताप युत, मानव जग विदिताय ॥३२॥ पगकी दीरघ तर्जनी, ता घर औरत दोय ॥ पहिलीको कुछ खेद होय, श्रीपति दास बगोय ॥३३॥ तर्जनिसों गुरु मध्यमा, पराधीन जन सोय ॥ विष्णुदास गृहगृह फिरे, आदर

देत न कोय ॥३४॥ औरतसे नहिं सुख मिले, तिस मानवको नेक ॥ विष्णुदास शिष देखले, निज उर धार विवेक ॥३५॥ दीरघ होय अनामिका, किंवा मध्यमसान ॥ विष्णुदास सो जानिये, मानवमहिद महान ॥३६॥ जो अति लघू अनामिका, दुखी तासु कर नार ॥ विष्णुदासकवि कोविदो, नयनन लेहु निहार ॥ ३७ ॥ जो कनिष्ठिका लघु अती, सो भी शुभ नहिं मीत ॥ चहिए कछुक समानहीं, तब जानो निर्भीत ॥३८॥ सवैया—पग भीतर ऊरध रेख भनै शिष होवत है सोऊ चार प्रकारा ॥ मूल अंगुष्ठ सुतर्जनीसे चल तिष्ठत एड़िह केर मँझारा॥ आपन तुंड अंगुष्ठ दिशंकर राज समाजके भोगन हारा ॥ हय गय पैदल साथ सु स्यन्दन श्रीपतिदास सभी जयकारा ॥ ३९ ॥ चौपाई—दूसर ऊर्ध्वरेख पहिचानो ॥ सीधी चलत वक्रता हानो॥ एड़ी मध्य स्थिरती पावै ॥ राजभागको अधिक

बधावै ॥४०॥ तीसर अव्रर्त तली लग जाकर ॥
ओर कनिष्ठिक वदन फिराकर ॥ बहु देवत गज-
की असवारी ॥ विष्णुदास गृह विभव सुभारी ॥
॥ ४१ ॥ किंवा ब्रह्मज्ञानकी दाती ॥ अब सुनले
चतुर्थ अब दाती ॥ उसी जगहसे चलकर प्यारे ॥
दो त्रय यव चल तिष्ठनधारे ॥४२॥ वहभी देवत
सुभग सवारी ॥ सुभग तुरंग अती बलकारी ॥
अंकुश यदि पग भीतर होई ॥ राजा पूजनीय जग
सोई ॥४३॥ चौपाई—जाके पगन स्वेद बहु आवै॥
सो दुर्भाग्य दरिद्रि कहावै ॥ डींगे पांउ छाजसम
होय ॥ निर्धन मानव जानो सोय ॥४४॥ कठिन
बुरे दुइ होयँ अँगुष्ठ ॥ फिरे पन्थ सद मानव दुष्ट ॥
अति लघु अति गुरु होंय अँगुष्ट ॥ सो नर भी
रुज भोगे पुष्ट ॥४५॥ डींगी शुष्क आँगरी जाहि॥
निरधन दुखिया जानो ताहि ॥ पराधीन सद-
ऋणी रहावै॥ विष्णुदास कवि भाषि सुनावै॥४६॥

दोहा—गिरा एकलहु इकगुरू, होइ कैद निर्यास॥
जाके गिरे रोम हैं, होवहि सन्तत नास ॥ ४७ ॥

दोहा—कररेखासंख्यावली, इति पञ्चम अध्याय ॥
पदलक्षण वर्णन करे, विष्णुदास हितलाय ॥५॥

शिष्योवाच।

दोहा—कर पद नख जंघादि गुरु, लक्षण देहु सुनाय ॥ तुम सद दीनदयालुहो, परा दास शरणाय ॥ १ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा—चमकत नख राजा कहो, कूरम पिष्ठ ललाम ॥ चमकत होहिं न जासु नख, जो निर्धन दुखधाम ॥२॥ नख जड़सों खाली दिखे, लखो दरिद्रीसोय ॥ सितनख रोगी जानिये, श्रीपतिदास वगोय ॥३॥ अरुणवर्ण नख जासुके, सो नर सुखियामान ॥ संततगृह मनभावती, भोगी लखो महान ॥४॥ वर्ण गुलाबी नख सदा, तेजवन्त सुखधाम ॥ ऋद्धि सिद्धि ठाढ़ी

रहैं, जेहि दर आठों याम ॥५॥ पीतवर्ण चिन्ता अधिक, सदा रहे परदेश ॥ सुखरंजक नहिं हेरही, निशिदिन पाय कलेश ॥६॥ गोहत्यादिक पाप- को, करता नहिं शरमाइ ॥ पापी मानव मानिये, सत्ववर्ण सत भाय ॥७॥ कृष्णवर्ण नख जासुके, अति क्रोधी मतिहीन ॥ कलही नित प्यारी लगे, निशिवासर धनखीन ॥८॥ अथ जंघालक्षणम् ॥

दोहा—अलप रोम जंघान पर, उत्तम फल निरधार॥
करीशुंड सम होंय यदि, विष्णुदास सुखकार॥९॥
रोमनके छिद्रन विषे, इक इक रोम लखाय ॥
महाराज सो जानिये, पावे सुख अधिकाय ॥१०॥
रोम न छिद्र निहारिये, यदि हों दुइ दुइ रोम ॥
ज्ञानी ज्ञाता वेदका, विष्णुदास अति सोम ॥११॥
यदि त्रय रोम निहारिये, दुखदायक मन मान ॥
सदा दरिद्री गृह रहै, सुके रोम अज्ञान ॥ १२ ॥
चार रोम अति दारिद्री, रोवहि पूतर नार ॥

विष्णुदास सुख ना लहे, धावे सब संसार ॥१३॥ कीर मयूर मरालगति, चले सुनृप पहिचान ॥ सिंह वृषभ गज श्वानजे, धनवन्ता मनमान॥१४॥ घूक चाल अति शीघ्र, चले सो निर्धन होय॥ भाग्य हीन मूरख अती, विष्णुदास अविलोय ॥१५॥ भैंसा गर्द्दभ मूरखकं, ताहि अरोगी भाल ॥ विष्णुदासपै जानिये, भाग्यहीन तेहि भाल ॥ १६ ॥ अथ लिङ्गलक्षणम् ॥ दोहा—सर्वलिङ्ग या जगतमें, जानो चार प्रकार ॥ सप्त अष्ट नव अंगुल, दश अंगुल निरधार ॥ १७ ॥ चौ०—शिश्नु होइ सप्तांगुल जाहू ॥ धनी सुखी मानी लख ताहू ॥ अति स्थूल यदि होय उपस्थ ॥ पुत्रहीन तिस लखे निरर्थ ॥ १८ ॥ दोइ अंडन पर लिंग निहारो ॥ वामे यदि निर्धन उर धारो ॥ पुत्रहीन दुख पाय हमेश ॥ विष्णुदास इमि भने महेश ॥१९॥ दाहिन तरफ लिंग जो होय ॥ सुतवन्ता धन संयुत सोय॥

दोइ अंडके मध्य जु होय ॥ अति झुक जांय दरिद्री सोय ॥ २० ॥ लिंग तिष्ठ होवहि जिस काल ॥ नाड़ी दिखे उठीदर हाल ॥ टूटी होंय ग्रंथि सो नाहीं॥ धनवन्ता भाषो नित वाहीं ॥२१॥ जेहि दुलिंगति होय कठोर ॥ वेश्या बाँदी भोगे चोर ॥ अंतहि सो निर्धन होय जावे ॥ विष्णुदास अतिही पछतावै ॥२२॥ सुंदर अरुण लिंग जिस होई ॥ बहुती भामिन भोगे सोई ॥ गण नारिनको लागे प्यार ॥ विष्णुदास कवि लेहु निहार॥२३॥ रक्तवर्ण सूक्ष्म लिंग कहिये ॥ अति गुणवन्त तीय पति लहिये ॥ आयु प्रयन्त भोग शुभ करे ॥ विष्णुदास शचिपति सम सरे ॥२४॥ अथ वीर्य वर्णनम् ॥ दोहा–जेहि मानवके शुक्रमें, आव पुष्पकी वास ॥ विष्णुदास सोइ जानिये, भूपति ही निरयास ॥२५॥ मधु समान शुभ गन्ध जो, आवे शुक्र मँझार ॥ धनी सुखी इस लोकमें,

श्रीपतिदास विचार ॥२६॥ चौपाई–पुष्प सुगन्ध नहीं यदि आवे ॥ तब बहु कन्याही उपजावे ॥ मांस समान वासना होई ॥ भोगी सुखी लखो नर सोई ॥२७॥ दोहा–मदिराके सम जासुके, वीर-जमें होय गन्ध ॥ धनयुत भोगी जगत यश, युत जग महँ बहु बन्ध ॥ २८ ॥ पतला वीरज जासुका,कन्या ताके होत ॥ अति गाढ़ा जेहि बीरज, नन्दन होत उदोत ॥ २९ ॥ इस विधि वीर्यसु कहत हैं, विष्णुदास मतिवान ॥ आगे लक्षण कहत हैं, गुह्यकेर मनमान ॥ ३० ॥ अथ गुह्य लक्षणम् ॥ चौपाई–जाहि गुह्यचलदल दल स्मान ॥ किंवा संपुट कंज समान ॥ ए लणक्ष शुभ जानो मीत ॥ लखो अशुभ जो यह न विप्रीत ॥३१॥ अथ मूत्रवर्णनम् ॥ चौपाई–दाहिन दिशा मूत्रकी धारा ॥ गिरे तो राजा करो उचारा ॥ युग्म धार जाके नित आहि ॥ अतिशय सुखिया जानो

ताहि ॥ ३२ ॥ दोहा–जाके मूत्रहुसे सदा, सुन्दर आवे ब[illegible] ॥ सोई धनी बखानिये, अहनिशि श्रीपति[illegible] ॥३३॥ अथ कटिवर्णनम् ॥ दोहा–सूक्ष्महो [illegible]ति चीकनी, चौडत्तण परकार ॥ ताको उत्तम मा[illegible]नये, विष्णुदास सुखकार ॥३४॥ अल्प पलद् कटि जासुके, शुष्क अस्थि दृष्टांत ॥ सर्व जनन महँ नीच बहु, भला न जानो तात ॥३५॥ अथ उदरवर्णनम्॥दोहा–जाको उदर कुरंग[illegible], सो धनवन्ता जान ॥ जाको सहश मोरके, अति सुखिया उर ठान ॥३६॥ मेढक दादुर जलोकसा, उदर सधारण जान ॥ गजसियार पुनि केहरी, विष्णुदास शुभमान ॥३७॥ तीन रेख जेहि उदर महँ, अति धनाढ्य पहिचान ॥ विष्णुदास अब नाभिको, वर्णन करों प्रमान ॥३८॥ अथ नाभिवर्णनम् ॥ चौपाई–अति गंभीर वर्तुलाकार ॥ भ्रमर परतु जनु गंग मँझार ॥ अस शुभ नाभि अशुभ लख

आन ॥ विष्णुदास कवि करे बखान ॥३९॥ अथ छातीवर्णनम् ॥ दोहा—आयत छाती जासुकी, सो शूरा बलवान ॥ जाकी छाती लघु अहै, सो कायर पहिचान ॥४०॥ अथ कुचवर्णनम् ॥ दोहा—जाकर कुच कुछ पलह युत, भोगीजानो तास ॥ जाके पलह न हेरिये, सो निर्धन निरयास ॥४१॥ अथ पीठवर्णनम् ॥ चौ०—जाकी पीठ पँचानन जैसी॥ सोभी मानव धनयुत हैसी ॥ पृष्ठ लखो कच्छप सहि जाहि ॥ राजा लखो जगतमें ताहि ॥४२॥ अथ भुजावर्णनम् ॥ दोहा—स्वामी लख दीरघ भुजी, लहू भुजायुतदास ॥ दाहिनभुज गुरु शूरमा, वामी कायर भास ॥ ४३ ॥ जानू लग जाकी भुजा, महाराज भगवान ॥ करी करम सम जो भुजा, विष्णुदास सुखखान ॥४४॥ चौ०—जाकी भुजा रोम होय भूर ॥ अति लहु कायर भनो जरूर ॥ भुजके लक्षण दिये बताय ॥ सुनो कांखके

अब मनलाय ॥४५॥ अथ कांखवर्णनम्॥ दोहा-
पीपल दल सम कांख जेहि, ऊर्ध्व लिपेटे रोम॥
बहुरि सुगंधीयुत लहैं, विष्णुदास लखसोम॥४६॥
अथ कंधावर्णनम् ॥ दोहा-वृषभ कंध सम धनी
लखु, अति शूरा बलवन्त ॥ जाकर कंधे ऊंच नहिं,
सो निरधन वर्णन्त ॥ ४७॥ कंधे रेखा एक यदि,
चौड़त्तर परकार ॥ मृत्युवेदना उदरसे, विष्णुदास
निरधार ॥४८॥अथ ग्रीवावर्णनम् ॥ दोहा-ग्रीवा
कंबु कपोतसी, ताको राजा मान ॥ भनै विप्र जे
याहिजो,सोनर मध्यम जान ॥४९॥ अथ चिबुक-
वर्णनम् ॥ दोहा-चिबुक नूत फल बीजसम, सो
सुखिया संसार ॥ नातर फल मध्यम भना, विष्णु-
दास सुखचार ॥५०॥ अथ अधरवर्णनम् ॥ दोहा-
अरुण वर्णकर अधरहों, सोनर नृप पहिचान॥यदि
डींगे दृष्टावहीं, ताको मध्यम मान ॥५१॥ अथ
दाँतवर्णनम् ॥ दोहा-कदमपुष्प सम दशनहों,

ताको जान नरिंद ॥ दाड़िमसे दृष्टावहीं, सो नर लहो सुरिंद ॥ ८२ ॥ मूषकके सम दशन जेहि, अहनिशि व्यापै रोग ॥ विष्णुदास तिस मानवं, नित्यहि ग्रसिहै सोग ॥८३॥ आगे निकसे दाँत जेहि, कहत दन्तुला सोइ ॥ भाग्यसूरसो जानिये, विद्या भी अवलोइ ॥ ८४ ॥ कवित्त–तीस दाँत होंय सो धनाढ्य सुखी भवमाहिं विद्या सम्पन्न अति जग यश जासको ॥ होय इकतीस धन भोग्यको करैया जान पाय सो चलाय उर धारत हुलासको ॥ सत्यवादी धनयुत भूपति समान जान नृपतिही हेर होंय बत्तिस दाँत आसको ॥ जानो धनी यशी सुत वनिता विनोद युत होय जो तैंतीस दाँत नायक अवासको ॥ ८५ ॥ दोहा–आठतीस नवतीस यदि, दशन अशुभ कुलनास ॥ कहे शंभु गिरिजापती, तुम प्रति श्रीपतिदास ॥ ८६ ॥

दोहा-करेखा संख्यावली, इति छठवां अध्याय ॥
अंघ्रादिक लक्षण कहे, विष्णुदास सुदपाय॥६॥

शिष्योवाच ॥ दोहा-श्रीगुरु केतक नरनके, होत दशन अठवीस॥पुनिनववीसनिहारिये,भाषि देहु जगदीश ॥१॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा-जेतक कमती तीससे,तेतक शुभ फल जान॥कवि पंडित संगीतकं, दांत अठाईस मान ॥ २ ॥ अथ मुखवर्णनम् ॥ चौपाई-शशि आनन सुशील धर्मज्ञ॥ मृग मूषकसा अतिशय अज्ञ ॥ कछुएसा मुख होवे जाहि ॥ भाग्यहीन नर जानो ताहि ॥३॥ शुक्तीके समआननहोय,अतिदारिद्री जानोसोय॥गजसम मुख जे होवै काहू॥पृथ्वीपति लखलीजे ताहू ॥४॥ अथ मुखशब्दवर्णनम् ॥ सवैया छन्द-मेघसमान जासु स्वर सुनिये ताको महाराज लखु मीत ॥ जाको नाद मरालसदृशहो ताहि धनी जानो नि-

भीत ॥ होय मयूरसमान शब्द जेहि सो भोगीभव है भवमाहिं ॥ जाहि अवाज सान चकवेके भाग-वन्त मानव लखु ताहि ॥५॥ दोहा–वायस गर्दभ श्वान स्वर, पापी अति निर्बुद्ध ॥ विष्णुदास सो जानिये, निशिदिन रहै सक्रुद्ध ॥६॥ अथ कपोल वर्णनम् ॥ दोहा–जा मानुषके हेरिये, मुकुरसमान कपोल ॥ विष्णुदास सो जानिये, गुणिजन माहँ अमोल ॥७॥ हँसबे लागे जासुके, परे गालपर खाल॥मातुपिता ताके मरें, सोनर हो कंगाल॥८॥ अथ जिह्वावर्णनम् ॥ दोहा–लोहित रसनावान नर, विद्या पढ़े अपार ॥ जाहि गुलाबी जीह है, ताहि भनो धनदार ॥९॥ कृष्णवर्ण जिह्वा जिसे, निर्द्धन निपट गँवार ॥ करे पापके कर्म सदा, जहँ तहँ ले धिरकाल ॥१०॥ डींगी अति स्थूल यदि, ताको जान लबार ॥ श्वेतवर्णकी जीह जेहि, करे सो

कर्म अचार ॥११॥ अथतालूवर्णनम् ॥ दोहा—रक्त वर्ण तालू जिसे, भागयवन्त धनवान ॥ वर्ण पीत जेहि तालुआ, नृप भोगी मनमान ॥१२॥ असित-रंग तालू जिसे, कुलनाशक मतिहीन ॥ उदर पोषणा होत नहिं, रहे सदा परदीन ॥१३॥ अथ नासिकावर्णनम् ॥ चौपाई—शुकसमान जेहि होवे घ्रान ॥ तिस मानवको राजा जान ॥ चिपटी पैंनी घ्राण जो लहिये ॥ अति धनवान तासुको कहिये ॥ १४ ॥ अति स्थूल पुनि टेढ़ी नास ॥ निर्धन निपट लखो तुम तास ॥ तिल प्रसूनसम नाक जु होय ॥ सुत युवतीयुत जानो सोय ॥१५॥ अथ नेत्रवर्णनम् ॥ दोहा—खञ्जन मीन सरोज मृग, गोदृग शुभ पहिचान ॥ निबला श्वान बिड़ाल वृक, हंस अशुभ मनमान ॥१६॥ निशानीछन्द—अरुण वर्ण दृग जासुके भाग्यवंत पछानो ॥ वृकसमान दारिद्र युत मानव मनमानो ॥ कूकर जैसी आँख

जेहि तस्कर परवीना ॥ बिल्ली हंस समान हग पापात्मा चीना॥१७॥ अथ भौंहवर्णनम् ॥ इंद्रायुध सम जासुकी शिष भौंह लखावे ॥ सूक्षम रुह लिपटे अति धनवंत बतावे ॥ ठाढ़ी विरली भौंह युग निर्धन विदतावे ॥ विष्णुदास भ्रुकुटी मिली सोई सूम कहावे ॥ १८ ॥ छप्पय छन्द–जाको भाल उतङ्ग शङ्कर चिह्न लखावे ॥ अर्ध मयंक मानिंद गर्त हष्टि नहिं आवे ॥ सुंदर भाल विशाल नारि नरको मन मोहत ॥ सो मानव इस भाँति उडुप उडुगणमें सोहत ॥ यदि बहु नीचे वंशमहँ जन्म लेत संशय नहीं ॥ विष्णुदास निश्चय लखो पूजनीय होय जहँ कहीं ॥ १९ ॥ सवैया–जाहि ललाट विषे त्रुक्तीसम नाड़ी शिरा निकसा नज-रावे ॥ सो नर त्यागी कहाय सदा पुनि वञ्चकता-करलोक रिझावे ॥ पापीपछान तिसे नरको निशि-वासर पाप अनेक कमावे॥शंभुकहे निजभामिनको

शिष श्रीपतिदास तुझे समझावै ॥ २० ॥ दोहा–जाके नाड़ी भालपै, कमलदलनसम जान ॥ विष्णु-दास सोइ मानवी, धन सम्पतिकी खान ॥२१॥ चौपाई–जेहि मानवके भीतर भाल ॥ यदि दृष्टैव-गहिरा खाल ॥ बध करबेके योग पुमान ॥ विष्णु-दास निश्चयकर जान॥ जे बहु जीवे जगत मँझार॥ पापी क्रूर दुष्ट दुराचार॥ जौलगजीवे पाप कमावै॥ अन्त समय मर नरक सिधावै ॥ २२ ॥ छप्पय छन्द–तीनों रेख सपष्ट जाहिके भाल विराजैं ॥ आयु वर्ष शत जान जाहिं पिख अरिगण भाजैं ॥ होय जु रेखा चार चारुसो मानव भनिये ॥ पांच रेख दश न्यून एक शत आयू गनिये ॥ जाके मस्त-कके विषे रेखनको नजरावही ॥ कही जु पूरब आयु सो विष्णुदासकविपावहीं ॥ २३ ॥ छप्पय छंद–छिन्नभिन्न होय रेख सोय लंपट पहिचानो ॥ चिन्ता

व्याये ताहि पुनः तस्करभी जानो ॥ जाके केशन मूल माहिं रेखा इक होवे ॥ बीस न्यून शतवर्ष जगतको नयनन जोवे ॥ पांच पांच दश ग्यारस छिन्न भिन्न दृष्टी परे ॥ जीवे चालिसवर्ष वह बहुरि काल प्राणन हरे ॥ २४ ॥ दोहा—भ्रुकुटीके ढिग एकही, वक्राकार रेखा पिखो॥तीसवर्ष सो जियेगा, विष्णुदास पुस्तक लिखो ॥२५॥ एकरेख भ्रुकुटी निकट, अर्धचन्द्र आकार ॥ ऊँचा होय ललाट जेहि, विष्णुदास भूपार ॥ २६ ॥ अथ श्रवणवर्णनम् ॥ दोहा—बाल शशीसम होंरिये, कोमल कर्ण हलंग ॥ मल नाहिंन नहिं कृष्णता, तौ शुभ कहो निसंग ॥२७॥ मधरे होवैं कान जेहि, भोगी है नर सोय ॥ छत्रके सम श्रवण जेहि, निर्धन तेहि अवलोय ॥ २८ ॥ जहँ कर्णोपर रोम हैं, श्रीपतिदास विचार ॥ तिस मानवकी रैन दिन,

सुखिया रहसी नार ॥ २९ ॥ अथ केशवर्णनम् ॥ दोहा—श्याम स्निग्ध स्वच्छ अति, कुञ्चित कुटिल निहार ॥ इस विधि केश निहारिये, विष्णुदास सुखकार ॥३०॥ चौपाई—डींगे मोटे फटे निहार॥ ह्रस्वे तस्कर लेहु विचार ॥ बीच नासिका कर्ण मँझार ॥ मुछसम सयुतं लेहु चिनार ॥ ३१ ॥ पाँउ कर्ण पुनि सगरी देह ॥ होवैं रोम सकल सुख लेह ॥ स्यन्दन शिविका हय असवार ॥ रमणिय रमणी रमे अपार ॥३२॥ अथ शोणित-वर्णनम् ॥ दोहा—कमलवर्णसम जाहिका, शोणित होवे मीत ॥ मनो भाग्ययुत ताहिको, विष्णुदास निर्भीत ॥ ३३ ॥ जाको रुधिर निहारिये, पीलत्तण परकार ॥ विष्णुदास तिस पुरुषको, अतिशय अधम निहार ॥३४॥ अतिशय अरुण निहारिये, जाको रुधिर सुजान ॥ विष्णुदास सोइ मानवी, भुवनमाहँ बलवान ॥३५॥ कृष्णवर्णको

रुधिर जेहि, ताको लहु मतिहीन ॥ सुख नयनों नहिं हैरही, ताप जरावैं तीन ॥ २६ ॥

दोहा—कररेखा संख्यावली, इति सप्तम अध्याय ॥
मानवके लक्षण भने, विष्णुदास हितलाय॥७॥

शिष्योवाच ॥ दोहा—पुरुष केर गुरुदेवजी, लक्षण सुने अघाइ ॥ अब शुभलक्षण वामके, भो प्रभु कहो बुझाइ ॥१॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा—जौन शुभाशुभ पुरुषके, लक्षण सोई नार ॥ भामिनके अब वर्णहूं,विष्णुदासहितधार॥२॥ अथ स्त्रीलक्षण वर्णनम् ॥ दोहा—बायें करमें हेरिये, लक्षण भामिन केर ॥ जौनशुभाशुभ होइतेहि,विष्णुदास कवि टेर ॥३॥ सुरतरुकलशस्थंभसम, वा दुवारसम होय॥ ऐसी रेखा होय जेहि, रानी कहिये सोय ॥ ४ ॥ मोटी जाकर आंगुरी, कर हो शूपसमान ॥ विष्णु-दास सो होयगी, विनपति दुःख महान ॥५॥ कर पग शिर मुख जासुके, पुष्पसमान लखाहिं॥ विष्णु

दास कवि जानिये, सुत पतिवंती ताहि ॥६॥ चौ०-
अति लघु शिर जिस नारी केरा ॥ ताहि रोगिनी
श्रीपति टेरा ॥ वर्ण पीत डींगा शिर जान ॥ तिस
योषितको निर्धन मान ॥७॥ दोहा—जेहि कनि-
ष्ठिका मूलमहि, वा मध्यमके माहिं ॥ मीन रेख
सौ वर्षलग, जीना कहिये ताहि ॥ ८ ॥ अतिहि
संघनी जासु कर, केहरि वृषभ प्रकार ॥ ससुरे
देवर साथ मिल, नित्य करे व्यभिचार ॥९॥ जाहि
वामके कर विषे, रेखा पुरुषसमान ॥ चाहे निर्धन
कुल विषे, सो होवे धनवान ॥१०॥ केहरि वाय-
सके चरण, सम कररेखा होय ॥ देवी रजसे
उत्पती, भई नागरी सोय ॥११॥ लता रेख कर
जासुके, वा तिल हाथ मँझार ॥ सो ससुरे गृह
नाहिं रहे, कोविद करो उचार ॥१२॥ अथ योनि-
लक्षण वर्णनम् ॥ कवित्त—जाहिकी योनिको मुख
संपुट समान लखो मिलो युगफांक सो महान

सुखवन्त है॥ जाको चलदलदल सानहो त्रिकोण शुभ कुछक उतंग भावतीसो निजकन्त है॥ मूषक-वारन सम वार है सुवर कुछ नरम नरम शुभ लक्षण अनन्त है॥ जानले पियारी शैलसुता शुभ योनि यहि अबले अशुभ भूरि दुःख जो लहन्त है॥ १३॥ जाहिकी कुरंगपगसान योनि होय पुनि चूल्हेके उदरसम नीकेके निहारिये॥ योनिपै अधिक रोम अतिही उतंग पुनि पृथक पृथक योनि आनन चिनारिये॥ लोहितकृष्ण साँप लक्षण जरावै पिया अति दुर्भाग्य सो कलहनी विचारिये॥ शंखके आकार काम धाम जास वामकेर पुत्र नहीं होय ताको बाँझही उचारिये॥ १४॥ दोहा—चिपटा खपरे सान सुख, योनीकी यदि खाल॥ भिक्षाकर पोषे उदर, दासी अतीदुखाल॥ १५॥ "जिस योषि-तकी जघनमें, रोम न होवें कोय॥ सुत धनयुत भा-मिन कही, अति सुखदायन सोय"॥ जाकी जंघनके

विषे, रोम होइँ सुन वाम ॥ सो कामिन दुर्चारही, अतिही दुखको धाम ॥ १६ ॥ जंघा पूर ललाट होय, कच्छपपृष्ठसमान ॥ ये शुभ लक्षण मानिये, नातर अशुभ पछान ॥१७॥पगकी पिखो अनामिका, पुनि कनिष्ठिका जान ॥ यह द्वै ऊंची-अवर सो, सो व्यभिचारन नाम ॥ १८ ॥ अंघ्रि केर सुतर्जनी, चढ़े अँगुष्ठ पीठ ॥ सो भी लख सस्वैरिणी, मंदी ताकर दीठ ॥ १९ ॥ बिल्ली सम जिस वामके,लोचन लखो सुजान ॥ सो कृतघ्न पहिचानिये, बोले क्रूर जबान ॥ २० ॥ अतिही ऊँचे जासुकी, होवैं युगल कपोल ॥ ताको तुम दुष्टा लखो, बोलत कडुवे बोल ॥२१॥ जा भामिनके गालपै, होय श्यामता छाह ॥ सो कामिन व्यभिचारणी,पतिको घर तज जाह ॥२२॥ लंबा मस्तक जासुको, सो निज पतिको भ्रात ॥ देवर वाको मार है, विष्णुदास अवदात ॥२३॥कवित्त-

जाहिको उदर बड़ो श्यामताके युत होय श्वसुरको मारके रहेगी आप धाममें ॥ ऊरधको ओष्ठ चढ़ा होइ जाहि ऊरधको मारेगी खसम दुर्लक्षण ये वा-ममें ॥ जाहि योषिताके मुख मूछ है विदित जग अतिही अशुभ ताहि हेरो आठ यासमें ॥ श्वशुर पिताको वंशनाशक है विष्णुदास पायेगी अपार दुःख रहे परधाममें ॥ २४ ॥ चौपाई—जाके होइ कुचनपर बार ॥ इकसम जाहिं न दन्त निहार ॥ श्रवण गुरू लघु होवहिं दोय ॥ अति दुर्भाग्य नारि लख सोय ॥२५॥ जाके दाँतन मूल मँझार॥ उठा उठा होय माँस निहार ॥ तिसको जान चोरटी मीत॥ विष्णुदास अतिशय निर्भीत॥२६॥ दीरघ दन्ती होय जु नार ॥ वा लंबी होवे विसि-आर॥काक वृक्क गृध्रसम करपाऊँ॥सोनाशकनिज पतिको नाऊँ ॥२७॥ जा नारीकर पगन मँझारा॥ नाड़ी थूल विविध प्रकारा ॥ सो कलही पापिनि

दुरचार ॥ विष्णुदास कवि लेहु निहार ॥ २८ ॥
भूरे केश जासुके हेरो ॥ चुंधले नयन कलहनी
टेरो ॥ वे भी करे कलह अति मीत ॥ निशिदिन
चिंता जारे चीत॥२९॥लोहित केश जासुके कहिये
गोल नयन लघु जाके लहिये ॥ सो निश्चय वेश्या
है जावे ॥ विष्णुदास कवि साँच सुनावे ॥ ३० ॥
परिहा छंद—जांबूनदसम देह जासुकी सोहती ॥
कंज तुल्य कर पाँउ पिया मनमोहती ॥ करे गुरुकी
भक्ति गुणज्ञ निहारिये॥ हो विष्णुदास शुभ लक्षण
येह विचारिये ॥३१॥ जा नारीके केश भालदिश
घूम हैं ॥ मानोनागिनि मंद इंदुमुख चूम हैं॥दक्षि-
णावर्तसों नाभि जासुकी होयरे ॥ विष्णुदास सुख-
धाम भामिनी सोयरे ॥३२॥ कमल पांखुरीतुल्य
नयन लख जासके ॥ शशिसम हेरो लक्षण जाकर
आसके ॥ अधरबिंबसम होइँ भामिनी सोहनी ॥
विष्णुदास सुख खान पिया मनमोहनी ॥३३॥

दोहा–कररेखासंख्यावली, इत्यष्टम अध्याय ॥
वामकेर लक्षण कहे, और सुनो मन लाय ॥८॥

श्रीगुरुरुवाच ॥ परिह्रा छंद–अंकुश कुण्डल चक्र होइ कर वामके ॥ भाग्यवन्त सोइ जान हेत नृप वामके ॥ महल केर करसाहि अकार निहारिये ॥ विष्णुदास सुख मूल सो वासुर धारिये ॥ ॥ १ ॥ धम धम चलती शब्द करत जोइ कामिनी ॥ विधवा होकर आन नरन सुख दामिनी ॥ वेद गुरूकी निंदक सो लख लेहुरे ॥ विष्णुदास हरि संग न करि हू नेहुरे ॥ २ ॥ दोहा–जा नारीके बगलमें, रोम होंय यदि भूर ॥ नाभि निकटभी होरिये, विधवा लखो जरूर॥ ३ ॥जे होय अधर अधरका, ऊरधसे स्थूल ॥ विष्णुदास सो होयगी, निज पतिसों प्रतिकूल ॥ ४ ॥ निश्चय ताको पति मरे, अति दुर्भागिन जान ॥ विष्णुदास नहिं तदपि जिय, जपतं श्रीभगवान ॥ ५ ॥ वामे वाम कनि-

ष्ठिका, मूल आयु युगमाहिं ॥ पतिकी रेख निहारिये, विष्णुदास करमाहिं ॥६॥ चौपाई—जो पति रेखा होवहिं दोय ॥ रूठी रहे पतीसों सोय ॥ किंवा पतिकी आयु सुभंग ॥ विष्णुदास बहुकरे न संग ॥७॥ पतिरेखा आयू ढिग होई ॥ चाहे पिय सद साँच वगोई ॥ सदा मदकी रहे खमारी॥विष्णुदास लख अति व्रतधारी ॥८॥ दोहा—पग अंगुष्ठसे तर्जनी,होवै गुरु अधिकाइ॥तबपहिली संतति मरे, राँड़ होइ सहिसाइ ॥९॥ कर बाँये जिस नारिके, होवैं यव आकार ॥ ताके सुत शुभ होइगा, विष्णुदास सुखकार॥१०॥शिष्य उवाच ॥ दोहा—औरत सुरति सँभार कर,वर्तै कवन प्रकार ॥ रावर दीनदयालु हो, मो प्रति करो उचार ॥ ११ ॥ सोरठा—भला प्रश्न शिष कीन, अब उत्तर सुन लीजिये ॥ तू अति परमप्रवीन, मोर गिरा मन दे सुनो ॥ १२ ॥ दोहा—इस विधि आयसु वेदकी,

सो अब देउँ सुनाइ ॥ जिससे नर पुनि नारिगण, पावहिं सुख अघाइ ॥१३॥ चौपाई—कन्या पांच वर्षकी होय ॥ विद्या पढ़े प्रेम युत सोय ॥ ब्रह्म-चर्यव्रत धारण करे ॥ सर्व कामनाको परिहरे ॥ ॥ १४ ॥ गुरुको धारण करे विचार ॥ सेवा करे विविध प्रकार ॥ वेद वेदांग पढ़े मनलाई ॥ ब्रह्म-ज्ञान जाने सहिसाइ ॥ १५ ॥ गुरुको जाने पूरण-ब्रह्म ॥ यामहिं रंचक करे न भ्रम ॥ देवन देव लखे गुरु देव ॥ तन मन धन कर जजे अभेव ॥ १६ ॥ भक्ति अनन्य वेद जो गाई ॥ धारण करे सोइ उरलाई ॥ भक्तिविहीन न पावै ज्ञान ॥ विष्णुदास गुरु है भगवान ॥ १७ ॥ मन वच क्रम गुरु सेवा ठाने ॥ अवर देव नहिं उरमहँ आने॥काम जीतकर रहा जो जावै ॥ तौतो नाहिं विवाह करावै ॥१८॥ जो कांक्षा उरभीतर होइ ॥ पतिको ढूँढे हितकर सोइ॥बीस वर्षकी होवहि जबहीं॥देवहि पतिभीतर

मन तबहीं ॥ १९ ॥ जब अपने पतिके गृहजावै ॥ सासु श्वशुरकी सेव कमावे ॥ पतिको जाने पूरण देव ॥ करे प्रेमयुत निशिदिन सेव ॥ २० ॥ जो पति होवै अधिक कुसंगी ॥ शुभ उपदेश देइ सर्वंगी ॥ जिस विधि नारि चुड़ाला भई ॥ निजपतिको बहुविधि मति दई ॥ २१ ॥ पतिको यहि दीनो उपदेश ॥ गुरु अपनेका सेव सुरेश ॥ आप चलत जिस मारग माहीं ॥ पतिको मग पकरायो वाहीं ॥ २२ ॥ पुनि आगे जो संतति होवे ॥ विद्याबीज तासु उर बोवे ॥ ऐसी नारी होवे जोइ ॥ विष्णुदास शुभ कहिये सोइ ॥ २३ ॥ दोहा—जैसे रानि मन्दालसा, दीन सुतन उपदेश ॥ ब्रह्मरूप सभही करे, नाशो सर्व कलेश ॥ २४ ॥ सौम्य स्वभाव जो नारि है, सोई शुभ पहिचान ॥ मीठी वाणी रैन दिन, क्रूर न वाक्य बखान ॥ २५ ॥ निंदा चुगली नहिं करे, वृथा न बोले रंच ॥ सत् चित् आनँद आतमा, अवर

असत्य प्रपंच ॥२६॥ दोहा—दोइ देव जग जागते, सूते अवर विचार॥ एक हि श्रीगुरुदेवजी, दूसर पती निहार ॥ २७ ॥ शिष्य उवाच ॥ दोहा—श्रीगुरु योषितको नहीं, पढ़न वेद अधिकार ॥ अति पंडित ब्राह्मणन पुनि इसविधि करत उचार ॥२८॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा—कृष्णदेव गीताविषे, बहुरि भागवत माहिं ॥ वेद पढ़ो नर नारि सब, कोऊ दूषण नाहिं ॥ २९ ॥ मंत्र लिखे जो वेदमहँ, पढ़े नारि मनलाय ॥ बिना पढ़े कहुँ परम शिष, सो किस विधि पढ़ जाय ॥ ३० ॥ चौपाई—जे कोइ पढ़े वेदको प्यारे ॥ शुभ मतिही उर अंतरधारे ॥ ईश्वरका सबको उपदेशा ॥ वा शूद्र वा भगवें भेशा ॥ ॥ ३१ ॥ शंका दोहा—सर्व पढ़े जे वेदको, पूछे विप्रन कौन ॥ देवत शुभ उपदेश अब, विप्र कहावत जौन ॥ ३२ ॥ उत्तर ॥ सर्व पढ़े जन वेद जे, तबही विप्र न होत ॥ चूके बोझा शीशसे, क्यों

नहिं लखत अचेत ॥ ३३ ॥ चौ०—म्हारो यहि सबको उपदेश ॥ पढ़ै वेद शिष नारि हमेश ॥ निशिदिन गुरू मूर्ति उर ध्यावै ॥ विष्णुदास मुक्ती सोइ पावै ॥३४॥ कुंडलिया छंद—करलेखा संख्यावली पढ़ै प्रेम युत कोय ॥ जन्म काल देहंतलो, ज्ञाता सो नर होय ॥ ज्ञाता सो नर होय मान वित्तादिक पावै ॥ जाने उरकी बात सु त्रयकालज्ञ कहावै ॥ कहत श्रीपतिदास ताहि ज्योतिष सब देखा ॥ गुरुको मिल रुचि साथ जाहि हेरी कर-रेखा ॥३५॥ बाण वेद ग्रह मेदिनी, संवत विक्रम केर ॥ नाथम्यंक युग संख्या, गुरु नानकको हेर॥ गुरु नानकको हेर मेष मिति शुक्ला जानो ॥ तिथि षष्ठी गुरुवार पुष्य वृद्ध योग पछानो ॥ विष्णु-दास सम्पूर्ण ग्रन्थ गुणीजन जानै ॥ सब संतन प्रतिमो नमे गुरु नानक निर्वाण ॥३६॥ दोहा—प्रश्न शिष्य गुरु वचलहर, समाधान हम कीन ॥

या पुस्तकको आदिसे, हेरो परम प्रवीन ॥३७॥
रोपड़ शहरस्थान मम, खेड़ा लखो उतंग ॥ जान्यो
पूरण ब्रह्म इक, उर सद रहित उमंग ॥ ३८ ॥(४)

दोहा ।

कररेखासंख्यावली, इति नवमो अध्याय ॥
भामिनके लक्षण कहे, विष्णुदास सुखदाय ॥ १ ॥

इति श्रीकररेखासंख्यावली कवि संत
संगीतक विष्णुदास श्रीमत् गहिर
गंभीरिये कृत स्त्रीलक्षणवर्ण-
न नाम नवम अध्याय
सम्पूर्ण ॥

॥ इति कररेखासंख्यावली समाप्त ॥

क्रय्य पुस्तकें (ज्योतिषग्रन्थाः)

नाम.		की. रु. आ.
ग्रहगोचर भाषाटीका	....	०–२
अधिकमास परीक्षा	....	०–४
योगायुर्दाय	....	०–२
शकुनमञ्जरी	....	०–१॥
पद्यपञ्चाशिका भाषाटीका	....	०–३
प्रश्नज्ञानप्रदीप (केरलीय प्रश्नशास्त्र) भाषाटीका	....	०–१२
पल्लीपतन भाषाटीका	....	०–१॥
रमलसार प्रश्नावली	....	०–१
मेघमालामाङ्गुली (वर्षादिका विचार)	....	०–४
रत्नपरीक्षा भाषा (रत्नोंकी परीक्षाका ग्रंथ)	....	०–४
रमलभास्कर हिन्दीभाषा	....	०–४

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ३०।४० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्धहै कि, इस यन्त्रालयकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोश, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं। शुद्धता स्वच्छता तथा कागज़की उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै।ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये, ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी-बंबई.